ISBN: 978-81-951728-6-3

राष्ट्र के विकास में हिन्दी भाषा का योगदान

संदीपना शर्मा
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
डी.ए. कॉलेज, जालन्धर
पंजाब, हरियाणा, भारत

सारांश

हिन्दी मात्र एक राष्ट्र भाषा नहीं हैं वो हिन्दुस्तान की संस्कृति और जीवन पद्धति का प्रतीक हैं | हिन्दी ने हमारे देश के विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं | हिन्दी भाषा का योगदान केवल हमारे समाज की उन्नति में ही नही हैं बल्कि हमारे देश की आजादी और हमारे राष्ट्र के निर्माण तथा विकास में भी हैं | किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी एकता में माना जाता हैं और स्वतन्त्रता संग्राम में एकता की कड़ी का काम करने वाली और संविधान में पर्याप्त संघर्ष के पश्चात् राष्ट्रीय भाषा के दर्जा पाने वाली हिन्दी भाषा ने पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने के कार्य किया |

भाषा राष्ट्र की वाणी होती हैं | उसी के माध्यम से राष्ट्र की गतिनिधि का चित्र प्रतिबिम्बित होता हैं | भारत देश संसार के सभी देशों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं यहाँ पर अनेक संस्कृतियों एवं सभ्याताओ का समन्वय होता रहा हैं | संविधान स्वीकृत भाषाओं में केवल हिन्दी ही राष्ट्र के अधिकांश भागों में बोली जाती हैं | वह देश की राजनैतिक, धार्मिक तथा

ISBN: 978-81-951728-6-3

सामाजिक शिक्षा संबंदी कार्यो के संचालन में समर्थ हैं | सुदृढ़ नींव के रूप में उसका समुद्र साहित्य हैं |

आज भूमण्डलीय, बाजारवाद में हिन्दी भाषा को सबकी संपर्क भाषा बना दिया हैं | चाहे आज पूंजी निवेशकर्ता हो अथवा राजनीती सभी के लिए हिन्दी एक आवश्यक भाषा बन गयी हैं | आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उन्हीं को नौकरी देती हैं | जिन्हें अंग्रेजी के साथ-साथ अच्छी हिन्दी आती हो | आज सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या में वृद्धि हुई हैं इनके तीन प्रमुख कारण माने जाते हैं -

1. भारतीय संस्कृति के प्रति बढ़ता आकर्षण |
2. भारत के मध्यवर्गीय विशालतम बाजार में प्रवेश कर उपभोक्ता से सीधा संवाद करने की इच्छा |
3. विश्वभर के विभिन्न समाजों में अपना रचनात्मक योगदान देते भारतवासी |

विदेशों में बसे भारतीय मूल के नागरिकों का हिन्दी के साथ गहरा सम्बन्ध हैं | उच्च शिक्षा या आजीविका की प्राप्ति के लिए घर-परिवार और अपनी संस्कृति से दूर भारतीयों में विश्व में जहाँ-जहाँ बसेरा किया वहाँ अपनी भाषा और संस्कृति का प्रसार किया | भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आस्था और स्मृतियों में उनका बसे होना इस बात का परिचायक हैं कि प्रवासी हिन्दी लेखक पूरी तरह से अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं और उन्होंने विदेशी प्रष्ठभूमि में रहते हुए भी प्रतिक्षण रामायण, महाभारत, वेदों और पुराणों द्वारा सांस्कृतिक पहचान को पुनर्जीवित रखा हैं | हिन्दी में लिखा जाने वाला प्रवासी साहित्य अत्यन्त प्रचुर एवं विलक्षण हैं | अभिमन्यु अनन्तु, उषा

ISBN: 978-81-951728-6-3

राजे सक्सेना, दिव्या माथुर, तेजेन्द्र शर्मा, सुरेन्द्रनाथ तिवारी, निर्मल वर्मा, सुभाष बेदी आदि प्रमुख प्रवासी साहित्यकार हैं | जिन्होंने कविता के साथ-साथ गध-साहित्य को भी उर्वर किया | निर्मल वर्मा, मृदुला गर्ग, सुनीता जैन आदि प्रतिनिधि कथाकारों ने भारतीय संस्कृति को खूब समझा और लिखा | प्रवास में रहकर भी वह हिन्दी साहित्य के विकास में निरन्तर अपना योगदान डालते रहे |

निर्मल वर्मा ने पाश्चात्य भूमि पर विचरते हुए भी भारतीय संस्कृति और भारतीय मूल्यों को स्वयं से विछिन्न नहीं होने दिया | विदेशी परिवेश उन्हें प्रभावित जरूर करता रहा किन्तु उन्हें स्वयं में समाहित न कर सका |

दूसरा भूमण्डलीकरण के दौर में बाजार का एक महत्वपूर्ण अस्त्र भाषा हैं भारत सवा अरब से भी ज्यादा जनसंख्या वाला देश हैं | यहाँ एक बड़ा मध्यवर्गीय उपभोक्ता वर्ग हैं मध्य वर्ग के पास आय बढ़ने और समृधि आने से क्रय शक्ति बढ़ी हैं | इस वर्ग में एक बड़ा समूह हिन्दी भाषी उपभोक्ताओं का हैं | दुनिया नित नये उत्पाद निकाल रही हैं | प्रौधोगिकी, तकनीकी विकास से मनुष्य को सुखी बनाने वाला सारा साजो सामान तैयार हैं | दुनिया के बाजार वस्तुओं से भरे पड़े हैं | भारत का मध्यवर्ग दुनिया को लुभा रहा हैं | "आज भारत दुनिया के बहुत बड़े बाजार के रूप में उभर कर आया हैं | बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भूमंडलीकरण के युग में हिन्दी की अनिवार्यता को महसूस कर रही हैं | क्योंकि यहाँ के 70 करोड़ से भी अधिक उपभोक्ता हिन्दी समझते हैं" बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने भारत में अंग्रेजी भाषा को लगभग छोड़ दिया हैं | वह उपभोक्ता की भाषा में ही उपभोक्ता तक पहुँचना चाहती हैं | आज टी.वी पर हिन्दी में विज्ञापनों की बाढ़ आ गई हैं |

ISBN: 978-81-951728-6-3

यहाँ एक बात लक्षित की जा सकती हैं कि हिन्दी भाषा में अंग्रेजी भी मिश्रित हो रही हैं | 'यह दिल माँगे मोर' जैसी पाँच लाइने इसका एक ज्वलन्त उदहारण हैं | हिन्दी भाषा का शब्द समूह बढ़ गया हैं | हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में विकसित होने लगी हैं | कोई भी भाषा तभी विकास करती हैं, जब वह अपनी आवश्यकता सिद्ध करे | यदि वह जरूरत की भाषा हैं, रोजगार संभव बनाने वाली भाषा हैं तो उसका स्वतः स्फूर्त होता हैं |

हिन्दी हिन्दुस्तान की भाषा हैं | यह भाषा हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की भाषा हैं | हिन्दी ने हमें विश्व में नई पहचान दिलाई हैं | हिन्दी हिन्दुस्तान को बाँधती हैं | इसीलिए तो हमारी मात्रभाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा व अन्तरराष्ट्रीय भाषा हैं | किसी भी भाषा की सम्पन्नता और व्यापकता का आधार उस भाषा का पठन-पाठन विदेशों में होता हैं या नहीं यह माना जाता हैं | जैसे अमेरिका में अमेरिकन सरकार के शिक्षा आयुक्त ने 10 मार्च 1959 को एक विज्ञाप्ति प्रकाशित की जिसमें हिन्दी को अन्य भाषाओँ के साथ अमेरिका वासियों के लिए अत्यावश्यक बताया | अमेरिका की कुछ शिक्षक संस्थाओं में हिन्दी-शिक्षण की व्यवस्था हैं | अनेक हिन्दी ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद भी हुआ हैं | प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास का अनुवाद भी गोरउन एवं रंगमल ने किया हैं | जो यूनेस्को द्वारा प्रकाशित हैं | ब्रिटेन में लन्दन विश्वविधालय में सम्बद्ध 'स्कूल ऑफ ओरियन्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज' नामक संस्था की स्थापना सन 1917 में रायल एशियाटिक सोसाइटी के दस वर्षों के प्रयास के बाद हुई थी | शुरू में इसका नाम 'स्कूल आफ ओरियन्टल लैंग्वजेज' था | यहाँ पर हिन्दी की पढ़ाई तीन स्तरों पर होती हैं | एक कोर्स परिचयात्मक इसका बी.ए आनर्स तथा तीसरा एम.फिल और पी.एच.डी. का हैं | इस संस्था में हिन्दी की पुस्तकें एवं पांडुलिपियाँ हैं | हालैंड के 'लरडेन

ISBN: 978-81-951728-6-3

विश्वविधालय' में भी हिन्दी पढ़ाई जाती हैं | यहाँ हिन्दी के पाठ्यक्रम में भातीय कला, इतिहास के साथ-साथ हिन्दी साहित्य की सभी विधाएँ पढ़ाई जाती हैं | रूस के विश्वविधालय हिन्दी भाषा और साहित्य के विभिन्न पक्षों पर शोधकार्य कराते हैं | मास्को में भी हिन्दी के उच्च स्तरीय अध्ययन की व्यवस्था हैं | हैम्बर्ग, बौन, बर्लिन विश्वविधालयों में भी हिन्दी पढ़ाने की नियमित व्यवस्था हैं | पूर्वी अफ्रीका के चारों देश केन्या, युगाण्डा, ताँगानीक और जंजीवार में आर्य समाज ने हिन्दी पढ़ाने की सराहनीय व्यवस्था की हैं | फिजी और मॉरिशस में भी हिन्दी की ललक देखने को मिलती हैं | हिन्दी अब हिन्दी भाषी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं हैं | इसका प्रचार सात समुद्र पार भी हुआ हैं | अनेक देश हिन्दी कस अध्ययन की सुविधा प्रदान करने में उदार हैं | अनेक विश्वविधालयों में हिन्दी के पठन-पाठन की उच्च स्तरीय व्यवस्था हैं |

हिन्दी भाषा का राष्ट्र निर्माण में बहुत अधिक योगदान रहा हैं | जब भारत आजाद भी नहीं हुआ था | तो आजादी से पूर्व भारत भाषाओं तथा संस्कृति के मध्य बंटा हुआ था | यहाँ मराठी, बंगाली, गुजरती, दक्षिण-भारत, राजस्थान, मुस्लिम, सिक्ख इत्यादि संस्कृति विधमान थी इनकी भाषाएँ तथा बोलियाँ भी अलग- अलग थी | यह स्वयं ऐसे बंटे हुए थे की इन्हें मिलाना सम्भव नहीं था | भारत की गुलामी का यह सबसे बड़ा कारण था | देश के नेताओं को जब इस कमज़ोरी का पता लगा तो उन्हें एक ऐसी भाषा की आवश्यकता पड़ी जो सबको एक क्र सके, जिसमें पूरे भारत की छवि विधमान हो, हिन्दी में ये गुण देखे गये | फिर क्या था हिन्दी ने सोच के अनुरूप कार्य कर दिखाया और इस भाषा के माध्यम से पूरा देश एक हो गया | जब भारत में एकता विधमान हुई तो आजादी मिलना असम्भव नहीं था | सन 1947 में भारत आजाद हो गया | यह हिन्दी का ही प्रभाव था | भाषा

ISBN: 978-81-951728-6-3

वैचारिक और मानस पटल पर उद्वेलित होने वाली भावनाओं का प्रतिबिम्ब हैं | विश्व में कई भाषाएँ बोली जाती हैं और सम्भवतः सभी भाषाएँ आपस में संवेदना की दृष्टी से जुड़ाव रखती हैं परन्तु हिन्दी भाषा अपनी सहजता और लचीलेपन के कारण इस संवेदनशीलता की विशेषता के अत्यन्त निकट हैं | हिन्दी के इतिहास पर नजर डालें तो पाते हैं कि इसका इतिहास हजारों वर्षों से भी पुराना हैं तथा यह भाषा अपनी विकास प्रक्रिया में गतिशील नहीं की तरह बहती हुई निरन्तर जटिलता से सरलता की ओर अग्रसर होती गई|

“निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल,

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिए को सूल |”

‘भारतेन्दु हरिश्चन्द्र’ के केवल ये भावुक उद्गार ही नहीं अपितु मानव जीवन का शाश्वत सत्य हैं | अपनी भाषा की उन्नति के बिना जीवन के किसी भी क्षेत्र में उन्नति संभव नहीं हो सकती | भाषा की उन्नति में हम प्रकार के विकास की जड़े निहित हैं क्योंकि उन्नति का आधार विचार हैं और भाषा के विकास के बिना विचारों का आदान-प्रदान स्पष्ट रूप से नहीं किया जा सकता हैं | जिस व्यक्ति को अपनी भाषा का ज्ञान नहीं उसके मन की मन में ही रह जाती हैं | वह अपने मन की व्यवस्थओं को पूर्ण रूप से प्रकट नहीं कर पाता | जिसका परिणाम यह होता हैं कि वह व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ और संतुलित नहीं हो पाता |

हिन्दी राष्ट्र भाषा होने के नाते सभी भारतवासियों को एक भावात्मक इकाई में पिरोने की अद्भुत क्षमता एवं शक्ति रखती हैं | पंजाबी, मद्रासी, मराठी, गुजराती, बंगाली, कश्मीर आदि विभिन्न भाषा-भाषी हिन्दी

ISBN: 978-81-951728-6-3

के द्वारा ही एक दूसरे के निकट आते हैं | अन्य भाषओं का क्षेत्र सीमित हैं जबकि हिन्दी का क्षेत्र विस्तृत हैं | हिन्दी सीमित क्षेत्र में सम्पर्क स्थापित करके सभी लोगों को भारतीयता में पिरो देती हैं | राष्ट्रीय भाषा के रूप हिन्दी भारतीय संस्कृति को प्रतिबिम्बति करती हैं हिन्दी को यदि सांस्कृतिक भाषा कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी | भारतीय साहित्य और संस्कृति की धरोहर हिन्दी हैं | राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की महत्ता देखते हुए विधालयों में राष्ट्र भाषा हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए |

राष्ट्र भाषा हिन्दी भारत की संस्कृति और सभ्यता की मूल चेतना को सूक्ष्मता से अभिव्यक्त करने का माध्यम हैं | हिन्दी भाषा अपने गुण और अपनी लोकप्रियता के बल पर भारत के शीर्ष का ताज बन चुकी हैं और धीरे-धीरे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान सुनिश्चित कर रही हैं | हिन्दी भारतीय जीवनशैली के अनुकूल एक ऐसी भाषा हैं जो हमारी सभ्यता, संस्कृति, कला, साहित्य और राष्ट्रीय एकता को बिम्बित करती हैं, विभिन्न प्रान्तों, जनसमुदायों और लोककलाओं की वाहिनी यह भाषा अनेक विदेशी भाषाओं को आत्मसात करने की क्षमता सिद्ध कर चुकी हैं चीनी और अंग्रेजी जैसी विश्व व्यापिनी भाषाओँ को वैज्ञानिकता, उच्चारण, कंप्यूटर और प्रसारण के क्षेत्र में पछाड़ कर निरन्तर अविरल गति से विकास और लोकप्रियता के पथ पर आगे बढ़ रही हैं | निस्सन्देह हिन्दी भाषा का गौरव और अस्तित्व अक्षुण हैं और सदैव रहेगा |